Chapter- 8

कुम्भ मेले का महत्व

STUDY NOTES

सर्वाधिक मान्य कथा देवताओ और दानवों द्वारा समुंद्र मंथन से प्राप्त अमृत बूंदे गिरने को लेकर है । महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इंद्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया । तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए । विष्णु जी ने देवताओं को दैत्यों के साथ संधि करके उन्हें समुंद्र मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी । देवताओं ने दैत्यों के साथ संधि करके उन्हें समुंद्रमंथन के लिए तैयार किया । अमृत कुंभ के निकलते ही देंवताओ के इशारे पर इंद्रपुत्र जयंत अमृत कलश को लेकर आकाश में उड़ गए । दैत्य पुत्र शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस पाने के लिए जयंत का पीछा किया । उनको रास्ते मे पकड़ा । इस प्रकार दैत्यों में और दानवों में अमृत को लेकर लड़ाई हुई । युद्ध के उपरांत चंद्रमा सूर्य गुरु और शनि ने अमृत कलश की दानवो से रक्षा की । इसके बाद विष्णु भगवान ने मोहनी रूप धारण करके देवता और दैत्यों को अमृत बाँट कर युद्ध को समाप्त किया । इसी युद्ध में अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों पर गिरी। ये चार स्थान हरिद्वार,प्रयागराज,उज्जैन और नासिक है । यह युद्ध बारह दिन तक

चलता रहा । देंवताओ के 12 दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के समान माना गया ।

जिस समय चंद्रमा ने कलश की रक्षा की उस समय वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र सूर्य ग्रह जब आते है । उस समय कुंभ का योग बनता है । जिस वर्ष जिस राशि पर सूर्य चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है । उसी वर्ष उसी राशि के योग में जहां जहां अमृत बूंदे गिरी थी । वहाँ वहाँ कुम्भ पर्व मनाया जाता है । बारह वर्ष के बाद कुंभ मेला बारी बारी से चारों स्थानों लगता है । जिसे महाकुंभ कहते है ।

हिमालय पर्वत श्रृंखला के शिवालिक पर्वत के नीचे स्थित हरिद्वार गंगाद्वार और मोक्ष द्वार के नाम से जाना जाता है । जब सूर्य मेष राशि मे प्रवेश करता है और बृहस्पति कुम्भ राशि मे प्रवेश करता है ।गंगा नदी के तट पर कुम्भ का आयोजन होता है । भारत मे 12 द्वारो में से एक ज्योतिलिंग त्रियंबकेश्वर नामक पवित्र शहर में स्थित है । गोदावरी नदी का उद्गम स्थल भी यही हुआ । 12 वर्षों में एक बार सिंहस्थ कुंभ मेला नासिक में मनया जाता है । मध्यप्रदेश की पूर्वी सीमा पर स्थित यह शिप्रा नदी के तट पर स्थित है । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शून्य अंश उज्जैन से शुरू होता है ।शिव महाकालेश्वर का मंदिर भी यही स्थित है ।जब सूर्य और बृहस्पति वृश्चिक राशि मे प्रवेश करते है तो शिप्रा नदी के तट पर कुम्भ का आयोजन होता है । त्रिवेणी संगम को पृथ्वी का केंद्र माना गया है । प्रयागराज को तीर्थो का तीर्थ माना

जाता है ।मत्स्यपुराण में मार्कण्डेय जी युधिष्टर से कहते है कि 'यह स्थान समस्त देवताओं से रक्षित है । यहां एक मास तक प्रवास करने ,पूर्ण परहेज रखने ,अखंड ब्रह्मचर्य धारण करने से देवताओं और पितरों को तर्पण करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है ।यहां स्नान करने वाला व्यक्ति 10 पीढ़ियों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाता है और मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ।'

इसमे सूर्य वृषभ राशि और वृहस्पति मकर राशि मे प्रवेश करता है । प्रयाग में दो कुम्भ मेले के बीच मे छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ का भी आयोजन होता है ।यह पर्व 14 जनवरी से 4 मार्च तक चलता है । चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में कुम्भ मेले का उल्लेख किया है। उनके अनुसार 600 इसवी में सम्राट हर्षवर्धन प्रयाग के कुम्भ मेले का आयोजन में सम्मलित होकर दान पुण्य करने का उल्लेख मिलता है।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow